## अट्ठाईस

# परमेश्वर की अनन्त योजना

# God's Eternal Plan

परमेश्वर ने हमारी रचना क्यों की? क्या आरम्भ से ही उसके मन में कुछ लक्ष्य था? क्या वह नहीं जानता था कि हर कोई उसके विरुद्ध विद्रोह करेगा? क्या उसने पहले से हमारे विद्रोह के परिणामों, उन सब दुखों व कष्टों को नहीं देख लिया था जिसका सामना मानवजाति को करना पड़ा है? अत: उसने पहले स्थान पर हर किसी की रचना क्यों नहीं की?

इन प्रश्नों का जवाब बाइबल हमें देती है। यह बताती है कि परमेश्वर द्वारा आदम और हव्वा के बनाए जाने से पहले वह जानता था कि वे तथा उनके बाद हर कोई पाप करेगा। उसने पतित मानवजाति की यीशु द्वारा छुटकारा दिलाने के लिए पहले से ही योजना बना ली थी। परमेश्वर की सृष्टि पूर्व योजना के बारे में पौलुस ने लिखा:

> परमेश्वर जिसने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर *अपनी मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है* (2तीमु 01:9 पर बल दिया गया है)।

परमेश्वर का अनुग्रह हम पर मसीह में सनातन से हुआ है, न केवल सनातन तक के लिए। यह संकेत देता है कि यीशु की त्यागपूर्ण मृत्यु ऐसी चीज़ है जिसकी योजना परमेश्वर ने युगों पूर्व बना ली थी।

इसी तरह से पौलुस ने इफिसियों को लिखे अपने पत्र में लिखा:

> उस *सनातन मनसा* के अनुसार, जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी (इफि. 3:11, पर बल दिया गया है)।

यीशु की क्रूस पर मृत्यु कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसे बाद में जोड़ा गया हो या

कोई ऐसी चीज़ जिसे परमेश्वर ने पहले से न जाना हो पर बाद में निर्धारित किया था।

सनातन से अपने अनुग्रह को देने का उद्देश्य ही परमेश्वर का नहीं था, बल्कि वह सनातन या अनन्तता से पहले से ही जानता था कि कौन उसके अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए चुनेगा, और उसने उनके नाम अपनी पुस्तक में भी लिख लिये:

> और पृथ्वी के सब रहने वाले *जिन के नाम उस मेम्ने (यीशु) की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए,* जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की सेवा करेंगे (प्रका. 13:8, पर बल दिया गया है)।

आदम के पतन ने परमेश्वर को आश्चर्य में नहीं डाला। न ही आपके और मेरे पतन ने। परमेश्वर जानता था कि हम पाप करेंगे, और वह यह भी जानता था कि कौन पश्चात्ताप कर प्रभु यीशु पर विश्वास करेगा।

## अगला प्रश्न

## The Next Question

यदि परमेश्वर पहले से ही जानता था कि कुछ यीशु पर विश्वास करेंगे तथा कुछ उसे अस्वीकार देंगे, तो उसने ऐसे लोगों की रचना क्यों की जो उसे अस्वीकार कर देंगे? उसने ऐसे लोगों को क्यों नहीं बनाया जिनके बारे में वह जानता था कि वे विश्वास करेंगे?

इस प्रश्न के जवाब को समझना कुछ कठिन तो हो सकता है लेकिन असंभव नहीं।

सर्वप्रथम, हमें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर ने हमारी रचना स्वतंत्र इच्छा के साथ की थी। अर्थात् हम सभी के पास यह निर्धारित करने का अधिकार है कि या तो हम परमेश्वर की सेवा करेंगे या नहीं करेंगे। आज्ञा पालन या आज्ञा उल्लंघन करने, पश्चात्ताप करने या पश्चात्ताप न करने के हमारे निर्णय परमेश्वर द्वारा पहले से ही निर्धारित नहीं हैं। वे हमारे चुनाव हैं।

इस तरह से, हममें से प्रत्येक की जांच होनी जानी चाहिए। बेशक, परमेश्वर पहले से ही जानता था कि हम क्या करेंगे, लेकिन हमें *उसके इस बात के बारे में पहले से जानने से पूर्व एक निश्चित समय पर कुछ करना था।*

एक उदाहरण के द्वारा, परमेश्वर फुटबॉल खेल के खेले जाने से पूर्व ही उसके परिणाम के बारे में जानता है, लेकिन परमेश्वर के परिणाम के पहले से ही जानने के लिए फुटबॉल खेल का खेला जाना ज़रूरी है। परमेश्वर ऐसे फुटबॉल खेलों के परिणाम को पहले से ही नहीं जानता (और न ही जान सकता है) जिन्हें कभी खेला नहीं जाता।

इसी तरह से परमेश्वर स्वतंत्र कार्यकर्त्ताओं के निर्णयों को केवल तब ही जान सकता है जब इन कार्यकत्ताओं को निर्णय लेने के अवसर दिये जाएं, उनकी जांच होनी चाहिए। और इसी कारण परमेश्वर ने केवल उन्हीं लोगों की रचना नहीं की (या न कर सका) जिनके बारे में पहले से ही जानता था कि वे पश्चात्ताप कर यीशु पर विश्वास करेंगे।

## अन्य प्रश्न

## Another Question

यह प्रश्न किया जा सकता है, ''यदि परमेश्वर केवल आज्ञाकारी लोगों को ही चाहता है तो उसने हमारी रचना फिर स्वतंत्र इच्छा के साथ क्यों की? उसने आज्ञाकारी रोबोट की रचना क्यों नहीं की?''

इसका कारण परमेश्वर का पिता होना है। वह हमारे साथ पिता-पुत्र जैसा संबंध रखना चाहता है, और रोबोट के साथ पिता-पुत्र जैसा संबंध नहीं हो सकता। परमेश्वर की इच्छा उन लोगों के साथ अनन्त परिवार बनाने की है जो अपनी स्वतंत्र इच्छा से उससे प्रेम करते हैं। पवित्रशास्त्र के अनुसार, उसकी पूर्व निर्धारित योजना थी:

> और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके *लेपालक पुत्र* हों (इफि. 1:5 पर बल दिया गया है)।

यदि आपको इस बारे में जानना है कि परमेश्वर को रोबोट को चलाने में कितना मज़ा आता, तो अपने हाथ में कठपुतली लेकर उस कठपुतली से कहलावाएं कि वह आपसे प्रेम करती है। इस तरह से, आपके हृदय में कोई भावना उत्पन्न नहीं होगी। कठपुतली केवल वही कह रही है जो आप उससे कहलवाना चाहते हैं। वह वास्तव में आपसे प्रेम नहीं करती।

प्रेम को जो चीज़ विशिष्ट बनाती है वह यह कि कोई अपनी स्वतंत्रत इच्छा के आधार पर ऐसा करने का चुनाव करे। कठपुतली और रोबोट प्रेम के बारे में नहीं जानते क्योंकि वे अपने लिए किसी भी चीज़ को निर्धारित नहीं कर सकते।

क्योंकि परमेश्वर एक ऐसे बच्चों का परिवार चाहता था जो अपने मन से उससे प्रेम करने और उसकी सेवा करने का *चुनाव* करते, इसी कारण उसे स्वतंत्र इच्छा वाले कार्यकर्त्ताओं की रचना करनी थी। इस निर्णय में उसके द्वारा इस खतरे को उठाना भी जुड़ा था कि कुछ कार्यकर्त्ता उससे प्रेम करने और उसकी सेवा करने का चुनाव *नहीं* करेंगे। और इन कार्यकर्त्ताओं को जिन्होंने जीवन भर उस परमेश्वर का सामना किया जो स्वयं को उन पर प्रगट करता है और जो सभी लोगों को अपनी सृष्टि, उनके विवेक और सुसमाचार की बुलाहट के द्वारा अपने निकट लाता है, अपने लिए उचित न्याय का सामना करना होगा,

क्योंकि उन्होंने स्वयं को परमेश्वर के क्रोध के योग्य ठहराया है।

नरक का कोई भी व्यक्ति परमेश्वर पर दोष नहीं लगा सकता, क्योंकि परमेश्वर ने प्रत्येक के लिए एक ऐसे मार्ग को दिया है जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति पापों के दण्ड से बच सकता है। परमेश्वर की इच्छा प्रत्येक व्यक्ति को बचाने की है (देखें 1तीमु. 2:4; 2 पत. 3:9), लेकिन इसका निर्णय प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं लेना है।

## बाइबल संबंधी पूर्वनियति
## Biblical Predestination

लेकिन पवित्रशास्त्र में दिये गए इन पदों का क्या करें जो परमेश्वर द्वारा हमारी पूर्वनियति को ठहराए जाने के बारे में बताते हैं, इस संसार की नींव रखे जाने से पूर्व हमारा चुनाव करते हुए?

कुछ दुर्भाग्यवश सोचते हैं कि परमेश्वर ने कुछ लोगों को बचाने के लिए चुना है तथा बाकी को नाश करने के लिए, इस आधार पर कि उन लोगों ने कुछ नहीं किया। अर्थात् परमेश्वर ने कुछ लोगों को बचाने या नाश करने को चुना होगा। यह विचार स्वतंत्र इच्छा की धारणा को मिटाता है और पवित्रशास्त्र में इस बारे में निश्चय ही नहीं सिखाया गया है। बाइबल पूर्वनियति के बारे में जो सिखाती है उस पर विचार करें।

निश्चय ही पवित्रशास्त्र सिखाता है कि परमेश्वर ने हमें चुना है, लेकिन यह सच्चाई उपयुक्त होनी चाहिए। परमेश्वर ने इस संसार की नींव रखे जाने पर ही उन लोगों को छुड़ाने का चयन किया जिनके बारे में पहले से ही जानता था कि वे उसके निकट आने के प्रभाव में आकर पश्चात्ताप कर सुसमाचार पर विश्वास करेंगे, परन्तु *स्वयं अपने चुनाव से।* परमेश्वर जिन लोगों को चुनता है प्रेरित पौलुस उनके बारे में जो कहता है उसे पढ़ें:

> परमेश्वर ने अपनी उस प्रजा को नहीं त्यागा, जिसे उसने पहले से ही जाना: क्या तुम नहीं जानते कि पवित्रशास्त्र एलिय्याह की कथा में क्या कहता है; कि वह इस्राएल के विरोध में परमेश्वर से विनती करता है कि हे प्रभु, उन्होंने तेरे भविष्यद्वक्ताओं को घात किया, और तेरी वेदियों को ढा दिया है; और मैं ही अकेला बच रहा हूं, और वे मेरे प्राण के भी खोजी हैं।'' परन्तु परमेश्वर से उसे क्या उतर मिला कि 'मैंने अपने लिये सात हज़ार पुरुषों को रख छोड़ा है जिन्होंने बाल के आगे घुटने नहीं टेके हैं।' *सो इसी रीति से इस समय भी, अनुग्रह से चुने हुए कितने लोग बाकी हैं (रोमि. 11:2-5, पर बल दिया गया है)।*

ध्यान दें कि परमेश्वर ने एलिय्याह से कहा कि उसने ''अपने लिए सात हज़ार पुरुषों को रख छोड़ा है,'' लेकिन उन सात हज़ार पुरुषों को *सर्वप्रथम* बाल के आगे घुटने न टेकने का चुनाव करना है। पौलुस कहता है कि इसी रीति से, वहां *परमेश्वर के चुनाव के अनुसार* विश्वास करनेवाले बाकी यहूदी भी थे। इसलिए हम कह सकते हैं कि हां, परमेश्वर ने हमें चुना है, लेकिन परमेश्वर ने उन्हें चुना है जिन्होंने सबसे पहले स्वयं सही चुनाव किया। परमेश्वर ने उन सभी को बचाने का चुनाव किया है जो यीशु पर विश्वास करते हैं, और सृष्टि से भी पहले का यह उसका चुनाव था।

## परमेश्वर का पूर्वज्ञान
## God's Foreknowledge

इन पंक्तियों के साथ साथ, पवित्रशास्त्र यह भी सिखाता है कि परमेश्वर उन सभी के बारे में भी *पहले से जानता था* जो सही चुनाव करते। उदाहरण के लिए पतरस ने लिखा:

> उन परदेशियों के नाम जो... तितर-बितर होकर रहते हैं *और परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार....चुने गए हैं (1पत. 1:1-2अ, पर बल दिया गया है)।*

हमें परमेश्वर के पूर्वज्ञान अथवा भविष्य ज्ञान के अनुसार चुना गया है। पौलुस ने भी पहले से जाने गए विश्वासियों के बारे में लिखा:

> क्योंकि जिन्हें (हमें) उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहलौठा ठहरे। फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है (रोमि. 8:29-30)।

परमेश्वर हममें से उन्हें पहले से जानता था जो यीशु पर विश्वास करने का चुनाव करते, और उसने पहले से ठहराया कि हम उसके पुत्र के स्वरूप में हों, परमेश्वर के बड़े परिवार में उसकी पुनरुत्पादक सन्तान बनते हुए। उस अनन्त योजना के साथ, उसने हमें सुसमाचार के द्वारा बुलाया, हमें धर्मी ठहराया, और अपने भावी राज्य में वह हमें महिमा भी देगा।

पौलुस ने अन्य पत्र में लिखा:

> हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। *जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उस में चुन लिया,*

*कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों* कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्याले में सेंत मेंत दिया (इफि. 1: 3-6, पर बल दिया गया है)।

यही सच्चाई यहां पाई जाती है– इस संसार की नीव डाले जाने से पूर्व यीशु मसीह के द्वारा उसने पवित्र पुत्र होने के लिए पहले से हमें ठहराया, जिनके बारे में वह पहले से जानता था कि पश्चात्ताप कर विश्वास करेंगे।

जैसा पहले बताया गया है, कुछ बाइबल पदों को घुमाते हुए यह दावा करते हैं कि हमारे पास अपने उद्धार के लिए कोई चुनाव नहीं है– चुनाव परमेश्वर को करना था। इसे वे बिनाशर्त मतदान का नाम देते हैं। लेकिन किसने इस 'बिनाशर्त मतदान' के बारे में सुना होगा, एक ऐसा मतदान जिसके लिए किसी अनिवार्यता की ज़रूरत नहीं होती? स्वतंत्र देशों में, हम अपने मनों में कुछ अनिवार्यताओं को पूरा करने के आधार पर राजनैतिक प्रतिनिधियों को चुनते हैं। हम जीवन साथी का चुनाव उनके द्वारा अनिवार्यताओं के पूरा किये जाने तथा उनकी उन खूबियों के आधार पर करते हैं जिनके लिये उन्हें पसंद किया जाए। तौभी, कुछ दर्शनशास्त्री हमें यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि परमेश्वर का चुनाव कि कौन बचाया गया है या कौन नहीं बचाया गया है एक ''बिनाशर्त मतदान'' है, जिसके लिए लोगों द्वारा किसी भी अनिवार्यता का पूरा किया जाना ज़रूरी नहीं है। इस तरह से लोगों का उद्धार *शुद्ध अवसर* द्वारा है, निर्दयी, अधर्मी, पाखण्डी और मूर्ख दानव की सनक जिसका नाम परमेश्वर है। '' बिनाशर्त मतदान'' स्वयं के प्रतिकूल है, क्योंकि *मतदान* शब्द प्रतिबन्धिता को दिखाता है, यदि यह एक ''बिनाशर्त मतदान'' है, तो यह मतदान ही नहीं है; यह शुद्ध अवसर है।

## बड़ा चित्र

## The Big Picture

अब हम बड़ा चित्र देखते हैं। परमेश्वर जानता था कि हम सभी पाप करेंगे, लेकिन उसने हममें से प्रत्येक के जन्म लेने से पूर्व ही हमारे छुटकारे की एक योजना बनाई। इस योजना में उसका अद्‌भुत प्रेम और न्याय प्रगट होता, क्योंकि इसके लिए ज़रूरी होता कि उसका पुत्र हमारे स्थान पर हमारे पापों के लिए मारा जाए और परमेश्वर ने न केवल यह पहले से ठहराया कि पश्चात्ताप और विश्वास करनेवालों को क्षमा किया जाएगा बल्कि यह भी कि हम उसके पुत्र यीशु के समान हो जाएंगे, जैसा पौलुस ने कहा, ''अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है'' (गल. 2:20)।

हम जो कि परमेश्वर की नया जन्म पाई हुई सन्तान हैं, हमें एक दिन अविनाशी

देह दी जाएंगी और हम एक सिद्ध समाज में हमारे अद्‌भुत स्वर्गीय पिता की सेवा करते हुए, उसे प्रेम करते हुए और उसके साथ सहभागिता करते हुए रहेंगे। हम एक नई पृथ्वी पर और एक नये यरूशलेम में रहेंगे। यह सब यीशु की त्यागपूर्ण मृत्यु के द्वारा संभव होगा! परमेश्वर द्वारा उसकी पहले से ठहराई गई योजना के लिए धन्यवाद दें।

## वर्तमान जीवन

## This Present Life

एक बार परमेश्वर की अनन्त योजना को समझ लेने पर हम यह अच्छी तरह से समझ सकते हैं कि यह वर्तमान जीवन किस बारे में है। प्राथमिक रूप में, यह जीवन प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक परीक्षा है। प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किया गया चुनाव निर्धारित करता है कि वह परमेश्वर संतान के रूप में अशीषित होने का आनन्द ले पाएगा/पाएगी जो कि अनन्तकाल तक उसके साथ रहेंगे। जो लोग परमेश्वर के निकट आते हुए स्वयं को दीन करते हैं और उसके बाद पश्चात्ताप व विश्वास करते हैं, वे ऊँचे उठाए जाएंगे (देखें लूका 18:14)। *यह जीवन प्राथमिक रूप में उस भावी जीवन के लिए एक परीक्षा है।*

यह हमारे वर्तमान जीवन के चारों ओर पाए जाने वाले रहस्यों को भी समझने में हमारी सहायता करता है। उदाहरण के लिए, बहुतों को आश्चर्य होता है, ''शैतान और उसकी दुष्ट शक्तियों को लोगों को सताने की अनुमति क्यों दी जाती है?'' या, ''जब शैतान को स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया था, तो उसे पृथ्वी तक पहुंचने की अनुमति क्यों दी गई?''

हम अब देख सकते हैं कि शैतान भी परमेश्वर की योजना में एक ईश्वरीय उद्देश्य को पूरा करता है। प्राथमिक रूप में, शैतान मानवता के लिए विकल्प के रूप में कार्य करता है। यदि एकमात्र चुनाव यीशु की सेवा करना था, तो हर कोई यीशु की सेवा करता, चाहे उसे अच्छा लगे या नहीं।

यह एक ऐसे मतदान के समान होगा जिसमें प्रत्येक को वोट देने की ज़रूरत है, लेकिन प्रतिनिधि केवल एक ही है। उस प्रतिनिधि को सर्वसम्मति से चुना जाएगा, लेकिन उसे कभी भी यह भरोसा नहीं हो पाएगा कि उसे चुनने वाला प्रत्येक व्यक्ति उससे प्रेम करता है। उनके पास उसे वोट देने के अलावा और कोई चुनाव नहीं था। परमेश्वर की दशा भी इसी तरह की होगी, यदि मनुष्यों के मनों में उसका प्रतिद्वन्द्वी कोई न हो।

इस पर स्वर्गदूतों की दृष्टि से विचार करें: यदि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को ऐसी वाटिका में रखा होता जिसमें कुछ भी वर्जित न होता तो क्या होता? तब आदम और हव्वा रोबोट के समान होते। वे इस तरह से नहीं कह पाते, ''हमने परमेश्वर

की आज्ञा मानने का चुनाव किया है', क्योंकि उनके पास आज्ञा उल्लंघन करने का कोई अवसर नहीं होता।

इससे अधिक महत्वपूर्ण है, परमेश्वर इस तरह से नहीं कह पाता, ''मैं जानता हूं कि आदम और हव्वा मुझ से प्रेम करते हैं,'' क्योंकि आदम और हव्वा के पास आज्ञापालन करने और परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को प्रगट करने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं होता। *परमेश्वर को उन्हें अनाज्ञाकारी होने का भी विकल्प देना था ताकि वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने का निर्धारण कर सकें।* परमेश्वर किसी की परीक्षा नहीं लेता (देखें याकू. 11:13), लेकिन वह प्रत्येक को परखता है (देखें भजन. 11:5)। उसके द्वारा उन्हें परखने का एक तरीका शैतान को या उनकी परीक्षा लेने की अनुमति देना है, जो कि इस तरह से उसकी अनन्त योजना के उद्देश्य को पूरा करता है।

## एक सिद्ध उदाहरण
## A Perfect Example

व्यवस्थाविवरण 13: 1-3 में हम पढ़ते हैं:

> यदि तेरे बीच कोई भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखने वाला प्रगट होकर तुझे कोई चिन्ह वा चमत्कार दिखाए, और जिस चिन्ह वा चमत्कार को प्रमाण ठहराकर वह तुझ से कहे, कि ''आओ हम पराए देवताओं के अनुयायी होकर, जिनसे तुम अब तक अनजान रहे, उनकी पूजा करें'' तब तुम उस भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखनेवाले के वचन पर कभी कान न धरना; क्योंकि *तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा। जिस से यह जान ले कि ये मुझ से* अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ *प्रेम करते हैं वा नहीं* (पर बल दिया गया है)।

यह परिणाम निकालना उचित प्रतीत होता है कि परमेश्वर ने ऐसे झूठे भविष्यवक्ताओं को चिन्ह व चमत्कार करने की योग्यता नहीं दी– ऐसा करनेवाला शैतान ही है।

यही सिद्धान्त न्यायियों 2:21-3:8 में भी दिया गया है जब परमेश्वर ने यह निर्धारित करने को कि इस्राएल उसकी आज्ञा का पालन करेगा या नहीं उसे उसके आस-पास के राष्ट्रों द्वारा परेशानी में डालने की अनुमति दी। यीशु को भी शैतान द्वारा परीक्षा लिये जाने को आत्मा जंगल में लेकर गया (देखें मत्ती 4:11) और इस तरह से परमेश्वर द्वारा उसे परखा गया। उसे निर्दोष प्रमाणित होना था, और उसके निर्दोष प्रमाणित होने के लिए उसकी परीक्षा होना ज़रूरी था।

## समस्त दोष शैतान पर ही नहीं डाला जाता

## Satan Does Not Deserve All the Blame

शैतान ने संसार के असंख्य लोगों के मनों को सुसमाचार की सच्चाई के प्रति अन्धा करते हुए धोखा दिया है, लेकिन हमें यह जानना चाहिए कि शैतान हर किसी को अंधा नहीं कर सकता। वह केवल उन्हें ही धोखा दे सकता है जो स्वयं को धोखा देने की अनुमति देते हैं, या फिर उन लोगों को जो सत्य को अस्वीकार देते हैं।

पौलुस ने घोषित किया कि अविश्वासियों की ''बुद्धि अन्धेरी'' हो गई है (इफि. 4:18)। लेकिन वह उनकी बुद्धि के अन्धे हो जाने व उनकी अज्ञानता के कारण को देता है:

> जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और *उनके मन की कठोरता के कारण* वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए गए हैं। और वे *सुन्न होकर* लुचपन में लग गए हैं, कि सब प्रकार के गन्दे काम लालसा से किया करें (इफि. 4:17ब-19, पर बल दिया गया है)।

उद्धार न पाए लोग केवल वे दुर्भाग्यशाली लोग नहीं हैं जिनके विरुद्ध शैतान चाल चलता रहता है। इसके विपरीत वे विद्रोही पापी हैं जो स्वेच्छा से अज्ञानता में हैं, और जो अपने मनों की कठोरता के कारण धोखे में रहना चाहते हैं।

कोई भी व्यक्ति धोखे में नहीं रह सकता, क्योंकि आपका जीवन इसे प्रमाणित कर देता है! परमेश्वर के प्रति अपने हृदय को कोमल कर पाने पर, शैतान आपको धोखे में बनाए नहीं रख सकता।

अन्त में, शैतान को मसीह के हज़ार वर्ष के राज्य के समय में बांधा जाएगा, और तब उसका किसी पर कोई प्रभाव नहीं होगा:

> और उसने (स्वर्गदूत ने) उस अजगर अर्थात् पुराने सांप को जो इबलीस और शैतान है; पकड़ के हज़ार वर्ष के लिए बान्ध दिया। और उसे अथाह कुंड में डालकर बंद कर दिया और उस पर मुहर कर दी, कि वह हज़ार वर्ष के पूरे होने तक जाति-जाति को लोगों को फिर न भरमाएगा; इसके बाद अवश्य है कि थोड़ी देर के लिए फिर खोला जाए (प्रका. 20:2-3)।

ध्यान दें कि शैतान के बंदी बनाए जाने से पूर्व, उसने ''जाति जाति के लोगों को भरमाया'' लेकिन बांधे जाने पर वह उन्हें धोखा नहीं दे पाएगा। तौभी, छुड़ाए जाने के बाद, वह फिर से उन्हें भरमाएगा:

> और जब हज़ार वर्ष पूरे हो चुकेंगे तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। और उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों ओर... होंगी लड़ाई के लिए इकट्ठे करने को निकलेगा। और वे सारी पृथ्वी पर फैल जाएंगी, और पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लेंगी: और आग स्वर्ग से उतरकर उन्हें भस्म करेगी (प्रका. 20:7-9)।

परमेश्वर इस लघु समय के लिए शैतान को क्यों छोड़ेगा?

इस कारण से कि वे जो मसीह से मन से घृणा करते और उससे प्रेम करने का ढोंग करते होंगे, वह प्रगट हो जाएगा तथा अन्ततः न्याय होगा।

इसी कारण से शैतान को अभी पृथ्वी पर कार्य करने की अनुमति दी गई है– कि मसीह से अपने मन से घृणा करने वालों का प्रगटीकरण हो तथा उनका न्याय हो। जब अपने ईश्वरीय उद्देश्य को पूरा करने के लिए परमेश्वर को शैतान की कोई ज़रूरत नहीं होगी, तब उस भरमाने वाले को आग की झील में सदा के लिए तड़पने को डाल दिया जाएगा (प्रका. 20:10)।

## भावी संसार के लिये तैयारी

## Preparing For the Future World

यदि आपने पश्चात्ताप कर सुसमाचार पर विश्वास किया है तो आपने इस जीवन की महत्वपूर्ण और अनिवार्य परीक्षा को पास कर लिया है। तौभी, यह न सोंचे कि परमेश्वर उसके प्रति आपकी विश्वासयोग्यता और समर्पण के आधार पर अपनी परीक्षा को जारी नहीं रखेगा। केवल वे ही जो विश्वास में बने रहते हैं, परमेश्वर के सम्मुख ''पवित्र और निर्दोष'' खड़े किये जाएंगे (कुलु. 1:22-23)।

इसके अतिरिक्त पवित्रशास्त्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि हम सभी एक दिन परमेश्वर के न्याय आसन के सामने खड़े होंगे, जबकि हमें पृथ्वी पर की हमारी आज्ञाकारिता के अनुसार प्रतिफल मिलेगा। अतः परमेश्वर के राज्य में भावी प्रतिफल को कमाने के लिए हमारी योग्यता को निर्धारित करने हेतु आज भी परखा जाएगा। पौलुस ने लिखा,

> तू अपने भाई पर क्यों दोष लगता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? *हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे।* क्योंकि लिखा है कि, ''प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर का अंगीकार करेगी।'' सो *हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा (रोमि. 14:10-12, पर बल दिया गया है)।*
>
> क्योंकि आवश्यक है, कि हम सबका हाल मसीह के न्याय आसन

> के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किये हों पाए (2कुरि. 5:10)।

सो जब तक प्रभु न आए, समय से पहले किसी बात का न्याय न करो; वही तो अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा, और *मनों की मतियों को प्रगट करेगा तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी* (1कुरि. 4:5, पर बल दिया गया है)।

## प्रतिफल क्या होंगे?

## What Will be the Rewards?

यीशु के प्रेम और समर्पण करनेवालों को क्या प्रतिफल दिये जाएंगे?

पवित्रशास्त्र दो भिन्न प्रतिफलों के बारे में बताता है। परमेश्वर की ओर से प्रशंसा और उसकी सेवा करने का अधिक सुअवसर। दोनों को ही यीशु द्वारा धनी मनुष्य के दृष्टांत में प्रगट किया गया है:

> सो उसने कहा, ''एक धनी मनुष्य दूर देश को चला ताकि राजपद पाकर फिर आए। और उसने अपने दासों में से दस को बुलाकर उन्हें दस मुहरें दीं और उनसे कहा, 'मेरे लौट आने तक लेन-देन करना।' परन्तु उसके नगर के रहनेवाले उस से बैर रखते थे, और उसके पीछे दूतों के द्वारा कहला भेजा, कि 'हम नहीं चाहते कि यह हम पर राज्य करे।' जब वह राजपद पाकर लौट आया, तो ऐसा हुआ कि उसने अपने दासों को जिन्हें रोकड़ दी थी, अपने पास बुलाया ताकि मालूम करे। कि उन्होंने लेन-देन से क्या-क्या कमाया। तब पहले ने आकर कहा, 'हे स्वामी, तेरे मुहर से दस और मुहरें कमाई हैं।' उसने उस से कहा; 'धन्य हे उत्तम दास, तुझे धन्य है, तू बहुत ही थोड़े में विश्वासी निकला अब दस नगरों पर अधिकार रख।' दूसरे ने आकर कहा; 'हे स्वामी, तेरी मुहर से पांच और मुहरें कमाई हैं।' उसने उससे भी कहा, कि 'तू भी पांच नगरों पर हाकिम हो जा।' तीसरे ने आकर कहा; 'हे स्वामी देख, तेरी मुहर यह है, जिसे मैंने अंगोछे में बांध रखी। क्योंकि मैं तुझ से डरता था, इसलिये कि तू कठोर मनुष्य हैं; जो तू ने नहीं रखा उसे उठा लेता है, और जो तू ने नहीं बोया, उसे काटता है।' उसने उससे कहा; 'हे दुष्ट दास, मैं तेरे ही मुंह से तुझे दोषी ठहराता हूं; तू मुझे जानता था कि कठोर मनुष्य हूं, जो मैंने नहीं रखा उसे उठा लेता, और जो मैंने नहीं बोया उसे काटता हूं। तो तू ने मेरे रुपये कोठी में क्यों नहीं रख दिये कि मैं आकर ब्याज समेत ले लेता?' और जो लोग निकट खड़े थे उसने उनसे कहा'

> 'वह मुहर इससे ले लो, और जिसके पास दस मुहर हैं उसे दे दो।' (उन्होंने उससे कहा, हे स्वामी, उसके पास दस मुहरें तो हैं) अब मैं तुमसे कहता हूं, कि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा, और जिसके पास नहीं, उससे वह भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा। परन्तु मेरे उन बैरियों को जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर राज्य करूं उनको यहां लाकर मेरे सामने घात करो।'' (लूका 19:12-27)।

निश्चय ही धनी व्यक्ति यीशु को प्रस्तुत करता है जो अनुपस्थित तो था परन्तु अन्नत: लौट आया था। यीशु के लौटने पर, हमें इसका लेखा देना होगा कि हमने अपने वरदानों, योग्यताओं, सेवकाईयों और सुअवसरों का क्या किया जो उसने हमें दिये, जिसे दृष्टांत में प्रत्येक सेवक को एक-एक मुहर दिये जाने के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। यदि हम विश्वासयोग्य रहे हैं तो हमें उसकी ओर से प्रशंसा के साथ प्रतिफल दिया जाएगा और पृथ्वी पर उसके साथ राज्य और शासन करने का अधिकार भी दिया जाएगा (देखें 2 तीमु. 2:12; प्रका. 2:26, 27; 5:10; 20:6), जो दृष्टांत में प्रत्येक सेवक को नगर पर अधिकार दिये जाने को दिखाता है।

## हमारे भावी भविष्य की निष्पक्षता

### The Fairness of Our Future Judgment

यीशु द्वारा सुनाया गया एक अन्य दृष्टांत हमारे भावी न्याय की पूर्ण निष्पक्षता को दिखाता है।

> स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ के समान है, जो सवेरे निकला कि अपने दास की बारी में मज़दूरों को लगाए। और उसने मज़दूरों से एक दीनार रोज़ पर ठहराकर, उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा। फिर पहर एक दिन चढ़े, निकलकर, औरों को बाज़ार में बेकार खड़े देखकर, उनसे कहा, 'तुम भी दाख की बारी में जाओ', और फिर उसने दूसरे और तीसरे पहर के निकट निकल कर वैसा ही किया। और एक घण्टा दिन रहे फिर निकलकर औरों को खड़े पाया, और उनसे कहा, 'तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े रहे?' उन्होंने उससे कहा, 'इसलिए कि किसी ने हमें मज़दूरी पर नहीं लगाया।' उसने उनसे कहा, 'तुम भी दाख की बारी में जाओ।' सांझ को दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा, 'मज़दूरों को बुलाकर पिछलों से लेकर पहिलों तक उन्हें मज़दूरी दे दे।' सो जब वे आए, जो घण्टा भर दिन रहे लगाए गए थे, तो उन्हें एक-एक दीनार मिला। जो पहिले आए, उन्होंने यह समझा,

> कि हमें अधिक मिलेगा; परन्तु उन्हें भी एक ही एक दीनार मिला। जब मिला, तो वे गृहस्थ पर कुड़कुड़ा के कहने लगे, कि 'इन पिछलों ने एक ही घण्टा काम किया, और तूने उन्हें हमारे बराबर कर दिया, जिन्होंने दिन भर का भार उठाया और घाम सहा?' उसने उनमें से एक को उत्तर दिया, कि 'हे मित्र, मैं तुझसे कुछ अन्याय नहीं करता; क्या तू ने मुझसे एक दीनार न ठहराया था? जो तेरा है, उठा ले, और चला जा; मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे, उतना ही इस पिछले को भी दूं। क्या उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूं सो करूं? क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है?' इसी रीति से जो पिछले हैं, वे पहिले होंगे, और जो पहिले हैं, वे पिछले होंगे (मत्ती 20:1-16)।

यीशु दृष्टांत में यह नहीं सिखा रहा था कि परमेश्वर के सभी सेवक अन्त में एक ही प्रतिफल को प्राप्त करेंगे, क्योंकि यह न केवल अनुचित होगा, बल्कि अन्य पदों के विरुद्ध भी होगा (उदाहरण के लिए देखें, लूका 19:12-27; 1कुरि. 3:8)।

इसके विपरीत यीशु सिखा रहा था कि परमेश्वर के प्रत्येक सेवक को फल मिलेगा, जो कुछ उन्होंने उसके लिए किया न केवल उस आधार पर, बल्कि इस आधार पर कि उसने उन्हें कितना अधिक अवसर दिया। अत: जिन्हें एक घण्टे का अवसर दिया गया उन्हें उन्हीं के समान प्रतिफल मिला जिन्होंने दिन भर कार्य किया था।

इसी तरह से, परमेश्वर अपने प्रत्येक सेवक को भिन्न उत्तरदायित्व देता है। उनमें से कुछ को वह अपने अद्‌भुत दानों का प्रयोग करते हुए हज़ारों लोगों की सेवा करने और उन्हें आशीष देने के महान अवसर और वरदान देता है। अन्यों को वह कम अवसर देता है, तौभी परमेश्वर ने जो कुछ उन्हें दिया, यदि वे उसमें अन्त तक विश्वासयोग्य बने रहते हैं तो वे भी उसी प्रतिफल को प्राप्त कर सकते हैं।[71]

## निष्कर्ष

## The Conclusion

परमेश्वर की आज्ञा पालन करने से महत्वपूर्ण और कुछ नहीं है, और एक दिन हर कोई यह जान जाएगा। बुद्धिमान लोग इसे जानते और इसके अनुसार कार्य करते हैं!

---

71. यह दृष्टांत यह भी नहीं सिखाता कि जिन्होंने छोटी आयु में ही पश्चात्ताप कर कई वर्षों तक कठिन श्रम किया वे उसी तरह का प्रतिफल पाएंगे जिन्होंने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष में पश्चात्ताप कर विश्वासयोग्यता के साथ केवल एक वर्ष तक परमेश्वर की सेवा की। यह अनुचित होगा, तथा परमेश्वर द्वारा प्रत्येक को उनके पूरे जीवन भर में पश्चात्ताप करने की अनुमति दी गई थी। अत: अधिक समय तक श्रम करने वाले उनसे अधिक पाएंगे जो कम समय तक श्रम करते हैं।

> सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का संपूर्ण कर्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों को चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा (सभो. 12:13-14)।

शिष्य निर्माता सेवक अपने पूरे मन से परमेश्वर की आज्ञा को मानता और अपने शिष्यों को वैसा ही करने को जो कुछ वह कर सकता है उसे करता है। हमारे भावी न्याय के इस महत्वपूर्ण विषय के संबंध में अतिरिक्त अध्ययन के लिये, देखें– मत्ती 6:1-6, 16-18 ; 10:41-42; 12:36-37; 19:28-29; 25:14-30; लूका 12:2-3; 14:12-14; 16:10-13; 1कुरि. 3:5-15; 2तीमु. 2:12; 1पत .1:17; प्रका. 2:26-27; 5:10; 20:6